



## पहला आनन्दमयी एहसास -2

“वो अब मेरा साथ देने लगी और उसके हाथ मेरे बालों में फिरने लगे.. मेरा लण्ड जैसे अन्दर-बाहर आता जाता तो उसकी आह भरी आवाज मेरा जोश बढ़ाने लगी। ...”

Story By: यश गर्ग (yashgarg009)

Posted: Wednesday, April 6th, 2011

Categories: [पहली बार चुदाई](#)

Online version: [पहला आनन्दमयी एहसास -2](#)

## पहला आनन्दमयी एहसास -2

अन्तर्वासना के सभी पाठकों का एक बार फिर से मेरा तहे दिल से नमस्कार।

आप सभी ने मेरी पिछली कहानी पहला आनन्दमयी एहसास पढ़ी होगी,

फिर भी मैं दोबारा अपना परिचय दे देता हूँ, मेरा नाम यश है, मैं 26 साल का नौजवान हूँ, जयपुर राजस्थान का रहने वाला हूँ, अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ...

और आप सभी के ढेरों मेल जो मुझे मिले, पढ़कर अच्छा लगा कि सबको मेरी ज़िन्दगी का पहला एहसास बहुत ही पसंद आया..

आपके मेल पढ़ने के बाद मुझमें दोबारा लिखने की एक ललक जगी इसलिए मैं उसी घटना के आगे का किस्सा बताता हूँ..

जैसे कि आप जानते हैं कि मैंने पहली बार अम्बिका से सेक्स किया.. एक सुखद एहसास एक साथ मैंने सेक्स की अनुभूति जानी..

इससे पहले सेक्स के नाम पर मैं सिर्फ पोर्न वीडियो देख कर मुठ मार लेता था।

पर जब से अम्बिका की चुदाई की, तब से दिल में बस वो ही बस गई थी कि अब मुठ नहीं, बस अब सिर्फ चुदाई..

हमारी पहली मुलाकात को कुछ ही दिन गुज़रे थे.. उस वक़्त हम दोनों के पास मोबाइल नहीं था इसलिए हम बस पत्र लिख कर काम चलाते थे, अपने हर दिन की बातें शेयर करते थे, मिलने के लिए तड़फते थे, पर क्या करें, ज़माने को देख कर भी चलना पड़ता है, कहीं किसी को पता लग जाये तो हम दोनों कहीं के ना रहें.. इसलिए अच्छे मौके की तलाश करने लगे..

पर सिर्फ निराशा हाथ लगती रही, होटल में रिस्क लेना नहीं चाहते थे, और किसी दोस्त की मदद लेकर बदनाम होना नहीं चाहते थे।

एक दिन अम्बिका पार्क में मुझसे मिलने आई तो उसने मुझे बताया- यश, एक मौका है हमारे मिलने का पर थोड़ा रिस्की है। पर ऐसा भी नहीं कि हम मिल ना सकें। मैंने उसे कहा- बोल यार, इस तड़फने से अच्छा हैं कि कुछ रिस्क उठा लें..

तो उसने बोला- मेरी सहेली है ना रोशनी, जो मेरे साथ बस में आती है, दो दिन बाद रोशनी के मम्मी-पापा उसके भाई को कोटा में कोचिंग के लिए छोड़ने जा रहे हैं, पर वो रात को जायेंगे और दूसरी रात तक आयेंगे.. रोशनी नहीं जा रही क्योंकि उसकी दादी की तबियत खराब है, वो यहीं रहेगी, मैंने उसे हमारे मिलने का बोला तो मान गई पर थोड़ी सी रिस्क लेकर तुम रात को 11 बजे उसके घर आ जाओगे क्या ? उसकी दादी 10 बजे सो जाती हैं फिर वो उसके कमरे में आती भी नहीं हैं, और तबियत खराब रहने से दवाई लेकर सोती हैं तो दवाई का असर पूरी रात रहता है।

मैंने कहा- ठीक है, पर रोशनी के सामने हम सेक्स कैसे करेंगे ?

तो उसने बोला- रोशनी के कमरे में दो बेड हैं, एक पर हम दोनों सो जायेंगे और दूसरी पर वो सो जाएगी, उसे कोई दिक्कत नहीं तो हम यह मौका क्यों छोड़ दें।

मैंने कहा- ठीक है, पर तुम अपने घर वालों को क्या बोलोगी ?

तो उसने बोला- रोशनी ने अपनी मम्मी को बोल दिया है, इसलिए उसकी मम्मी मेरी मम्मी से बोल देगी..

मैंने इतना सुनकर उसे हग कर लिया, फिर हम दोनों वहाँ से आ गए।

मैंने दो दिन से अपने लण्ड की सरसों के तेल से खूब मालिश की और उस दिन का इंतज़ार करने लगा, और वो घड़ी आ भी गई..

और फिर घर वालों को झूठ बोल कर घर से निकल पड़ा की मैं मेरे दोस्त के घर जा रहा हूँ

पढ़ने के लिए.. उसका घर पास में ही था तो घर वाले मान गये..

मैं वहाँ से जल्दी निकला और उसके घर की तरफ चल पड़ा.. बस मन में एक ही ख्याल आ रहा था कि मौका मिला तो रोशनी के भी मजे लूँगा.. पर फिर सोचता कि ना यार, अम्बिका से भी हाथ धोना पड़ सकता है..

घड़ी में टाइम देखा तो 11 बजने वाले थे, मैं उसके घर के बाहर आ चुका था, बस देख रहा था कि कैसे अन्दर जाऊँ..

मेरी नज़र छत पर गई तो देखा दोनों ऊपर खड़ी मेरा इंतज़ार कर रही थी, मुझे इशारा किया कि दीवार फांद कर आ जाओ।

मैंने वैसे ही किया.. और अगले ही पल मैं उसके घर के अन्दर था।

दोनों मुझे एक कमरे में ले गई.. कमरे में रोशनी की तो मैंने दोनों को देखकर ही हैरान हो गया.. अम्बिका ने लाल रंग का टॉप और नीचे काली स्कर्ट पहन रखी थी, उसकी मखमली जांघें साफ़ साफ़ दिखाई दे रही थी.. और दूसरी तरफ रोशनी की तरफ देखा तो मेरा लण्ड आवेश में आ गया.. रोशनी के उरोज अम्बिका से भी ज्यादा कसे और उभरे हुए थे.. और उसने जामुनी रंग की स्कर्ट और सफेद टीशर्ट पहन रखी थी.. मेरा लण्ड तन कर बाहर निकलने के लिए मचलने लगा..

फिर अम्बिका बोली- यश, इसकी दादी तो उसी कमरे में सो गई जिस कमरे में हमें सोना था, अब यह इसके मम्मी पापा का कमरा है और हमें रात यहीं गुजारनी पड़ेगी, पर बेड एक ही है इसलिए हम तीनों को उसी पर सोना पड़ेगा..

मेरे मन में ख्याल आया कि इन दोनों ने कुछ न कुछ खिचड़ी पकाई है, आज तो यश बेटा या तू नहीं या तेरा लण्ड नहीं.. पर उस वक़्त लण्ड में आवेश था, यही ख्याल आया कि 2 क्या 4 होती तो मेरा लण्ड इनकी प्यास बुझा देगा.. फिर पानी पीकर हम तीनों बेड आ

गये.. बीच में अम्बिका और दोनों साइड में हम दोनों..

लाइट बंद कर दी.. अचानक बेड पर थोड़ी से हलचल हुई.. मैंने सोचा कि करवट बदल रही है, अम्बिका ने कहा था मुझे कान में कि थोड़ी देर रुक जाओ, यह सो जाये उसके बाद..

थोड़ी देर बाद एक हाथ मेरे शरीर पर रेंगने लगा, मैं भी उसकी तरफ खिसक गया.. और एक दूसरे को आलिंगन करने लगे, दोनों की साँसें तेज चलने लगी.. मैं उसे किस करने लगा, खूब देर तक स्मूच किया फिर उसकी टीशर्ट निकालने लगा.. फिर धीरे से ब्रा खोल दी.. कमरे में अंधेरा होने से कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था.. हम दोनों मदहोशी में खोने लगे.. और कब एक दूसरे के कपड़े निकाल दिए, पता ही नहीं लगा..

मैं उसके ऊपर आकर उसके माथे पर, गालों पर, होठों पर होते हुए कंधे को चूमने लगा.. उसकी साँसें और शरीर में बैचेनी सी होने लग रही थी मानो जैसे तड़फ रही हो।

मैं कंधे से उसके वक्ष पर आ गया, उसके चूचों को मसलने लगा तो वो छूटपटाने लगी। मैंने उसके एक निप्पल को अपने मुँह में लिया तो उसके मुँह से सिसकारियाँ निकलने लगी और हम दोनों की मादक तेज़ चलती साँसों से कमरे में उफ़ान आ रहा था..

मैं वक्ष से नीचे सरक कर पेट पर नाभि पर किस करने लगा..

जैसे ही नीचे चूत के पास पहुँचा तो स्पर्श से एहसास हुआ कि चूत पर झाँट के बालों की सफाई ताज़ा ही की हो..

मैंने वक्रत की नजाकत देखी और उसकी चूत पर मुँह लगा कर चूमने-चाटने लगा। वो शरीर को ऊपर नीचे करने लगी और बार बार मेरे बालों को खींचने लगती.. अपने पैरों को मरोड़ने लगी, कभी शरीर को सिकोड़ती..

मैं उसकी चूत में अपनी जीभ डाल डाल कर उसकी चूत को चाटने लगा.. नीचे जीभ ले

जाता, फिर ऊपर तक जीभ ले आता...

वो एकदम से तड़फने लगी.. मैं उसकी चूत में अपनी अंगुली डालने लगा तो वो उछल पड़ी जैसे कि पहली बार चुद रही हो.. उसकी सिसकारियाँ मेरा मनोबल बढ़ाये ही जा रही थी..

अचानक मेरे मुँह पर गीलापन सा आने लगा और वो एकदम उछलने लगी, मैं समझ गया कि उसकी चूत ने पानी छोड़ दिया है।

मैं उसकी चूत को चाटने लगा.. फिर ऊपर उठकर मैंने उसे कहा- मेरा लण्ड चूस अब...

उसने वही किया, मेरा लण्ड चूसने लगी.. मैं उसके मुँह में लण्ड अन्दर बाहर करने लगा पर उसकी साँस फूलने लगी, उसने मुँह से लण्ड बाहर निकाल दिया और हांफने लगी.. मैंने सोचा कि अब चुदाई कर ली जाये.. और यही सोच कर मैंने कहा उसे- सीधा लेट जा.. वो सीधी होकर लेट गई..

मैंने उसे कहा- क्रीम या तेल है तो दो !

उसने अपने पास पहले से ही क्रीम रखी हुई थी, मैंने क्रीम ली और उसकी चूत पर लगाई, फिर अपने लण्ड को भी क्रीम लगा कर चिकना कर लिया, फिर लण्ड को उसकी चूत पर टिकाया, चूत एकदम टाइट सी लग रही थी..

मैं देर ना करते हुए उसकी चूत में लण्ड घुसाने लगा पर लण्ड अन्दर सरकने का नाम नहीं ले रहा था क्योंकि जब मैं अन्दर डालने की कोशिश करता, वो अपने जांघों को आपस में दबा लेती और मेरा लण्ड बाहर ही फिसल कर रह जाता।

मैंने सोचा कि ऐसे काम नहीं बनेगा, मैंने उसकी दोनों टांगों को अपने कंधों पर लिया और उसके घुटनों को उसकी छाती की तरफ झुकाया और लण्ड पकड़ कर उसकी चूत में डालने

लगा, वो दर्द से तड़फ उठी और खुद को छुटाने की कोशिश करने लगी।

मैंने उसे धीरे से कहा- थोड़ी देर रुक यार, उस दिन भी तो थोड़ा सा दर्द हुआ था, थोड़ा और सह ले !

फिर वो शांत हो गई, मैंने देर ना लगाते हुए उसकी चूत में लण्ड का झटका दिया तो मेरा आधा लण्ड अंदर चला गया.. और वो चीख पड़ी।

मैंने उसके मुँह पर हाथ रख दिया तो उसने दांतों से काट खाया.. पर उस दर्द में भी मज़ा आया.. और मैं धीरे धीरे लण्ड ऊपर नीचे करने लगा, उसे भी थोड़ा मज़ा आने लगा। लण्ड अभी पूरा अंदर नहीं गया था इसलिए धीरे धीरे छेद को चौड़ा करने लगा.. और फिर जब देखा कि उसे भी मज़ा आ रहा है तो मैंने एक झटका और दिया और मेरा लण्ड उसकी चूत फाड़ते हुए अन्दर जाकर धंस गया...

एक बार तो वो छटपटाई, फिर मैंने धीरे धीरे लण्ड ऊपर नीचे किया तो उसे अच्छा लगने लगा.. कमरे में सिसकारियाँ गूँजने लगी.. धप धप की आवाज गूँजने लगी.. वो अब मेरा साथ देने लगी और उसके हाथ मेरे बालों में फिरने लगे.. मेरा लण्ड जैसे अन्दर-बाहर आता जाता तो उसकी आह भरी आवाज मेरा जोश बढ़ाने लगी।

धीरे धीरे मैं स्पीड बढ़ाने लगा और उछल उछल कर उसकी चूत को फाड़ने लगा.. उसकी सिसकारियाँ मेरे लण्ड में जोश भर रही थी पर मेरा लण्ड है, कोई पहाड़ नहीं इसलिए मेरा लण्ड अपना लावा छोड़ने को तैयार हो उठा.. पर उसी पल वो भी अपने चरम पर पहुँचने लगी और मेरा लण्ड उसके पानी का एहसास करने लगा..

मैंने उसे कहा- मेरा लण्ड पानी छोड़ने वाला है !

तो उसने कुछ नहीं बोला और चुप रही.. और फिर अचानक मेरा लण्ड गर्मागर्म वीर्य उसकी चूत में छोड़ने लगा..

और मैं निढाल होकर उसी पर गिर गया...

हम दोनों पसीने से तरबतर हो चुके थे, मैंने उसे कहा- तुरंत अपनी चूत धो कर साफ़ कर आ..

वो उठ कर चल दी तो उसके जाने के बाद मैंने सोचा ऐसे किसी अनजान घर में हूँ तो कपड़े पहन लूँ, इसलिए लाइट ऑन करने के लिए स्विच खोजने लगा..

मेरी कहानी पढ़ कर आपको कैसा लग रहा है, आप मुझे मेल करके जरूर अवगत करवाएँ !

yashgarg009@gmail.com



## Other stories you may be interested in

### मामा की बेटी की रस भरी चुदाई

दोस्तो, मेरा नाम परम है और मैं दिल्ली में रहता हूँ। मैं हमेशा से ही हिन्दी सेक्स स्टोरी पढ़ा करता था। आज मैं भी आपको अपने साथ हुई एक सच्ची घटना बताना चाहता हूँ। यह कहानी एकदम सच है। ये [...]

[Full Story >>>](#)

### ममेरे भाई ने मेरी कुंवारी चूत की चुदाई की-2

मेरी चूत चुदाई की कहानी के पहले भाग ममेरे भाई के साथ मेरी कुंवारी चूत की चुदाई-1 में अब तक आपने पढ़ा कि मेरे ममेरे भाई अर्पित ने मेरे मामा मामी की गैरमौजूदगी में मुझे सेक्स के लिए पटा लिया [...]

[Full Story >>>](#)

### जीजा का ढीला लंड साली की गर्म चूत

नमस्कार मेरे प्यारे दोस्तो, मैं सपना राठौर आपके साथ फिर से अपनी नई कहानी शेयर करने के लिए वापस आई हूँ। आपने मेरी पिछली कहानियों को खूब पसंद किया जिसमें मैंने जीजा के साथ सेक्स किया था। अब मैं अपनी [...]

[Full Story >>>](#)

### अमीर औरत की जिस्म की आग

दोस्तो! मेरा नाम विशाल चौधरी है और मैं उ. प्र. राज्य के सम्भल जिले का रहने वाला हूँ। यह बात तब की है जब मैं अपनी पढ़ाई पूरी करके अपने घर पर रह रहा था और घर वालों का मेरे [...]

[Full Story >>>](#)

### ऑफिस की दोस्त की कुंवारी चूत का पहला भोग

दोस्तो, मैं जो कहानी आप लोगों को सुनाने जा रहा हूँ वह आपको जरूर पसंद आएगी। यह कहानी मेरी अपनी कहानी है। कहानी को शुरू करने से पहले मैं आपको अपने बारे में कुछ बताना चाहूंगा। मेरा नाम आदित्य है [...]

[Full Story >>>](#)

